तर्ज- चौदवीं का चांद हो

सूरत कमाल है या बेमिसाल है
मेहर बिना ब्यान करें क्या मजाल है

1- शोभित है पाग शीश कमल पर हजूर के
चमके जिमीं फलक इस मुखड़े के नूर से
सुन सुन के मीठी रसना रूह होती निहाल है

2- नैनों से उनके इश्क के सागर उमड़ रहे
मुस्कान देख अधरों की मोमिन उलझ रहे
बांकी है जिनकी चितवन वो नूरेजमाल हैं

3- कानन तलक हैं केश क्या खुशबू लिए हुए
मस्तक तिलक सुहामणा शोभा किए हुए
नूरी छबि जो देखे कभी हो बेहाल है

Nijanand App